International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 3, May-June, 2026

कालिदास के प्रकृति- चित्रण में पर्यावरणीय चेतना और आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता

रेनु कुमारी

संस्कृत सहायक प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय दुबलधन, झज्जर, हरियाणा।

शोध सारांश

महाकवि कालिदास भारतीय साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विभूति हैं। महर्षि अरविंद का कथन है कि वाल्मीकि, व्यास तथा कालिदास प्राचीन भारतीय इतिहास की अंतरात्मा के प्रतिनिधि हैं, इनकी कृतियों में हमारी संस्कृति के प्राणतत्व सुरक्षित हैं।वस्तुत: साहित्यिक प्रतिभा ने सत्यम् शिवम् और सुंदरम् के अनुसंधान में जो बहुमूल्य मणि- रत्न प्राप्त किये, वे सभी कालिदास की रचनाओं में एकत्र सन्निविष्ट हैं। इस विश्ववन्द्य कवि के अनेक अनवद्य गुणों पर मुग्ध होकर एक विद्वान ने लिखा है-

पुरा कविनां गणना प्रसंगे कनिष्ठकाधिष्ठति कालिदास:।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका नाम सार्थवती बभूव।। (1)

कालिदास की सर्वतोमुखी प्रतिभा, कमनीय कल्पना ,मौलिकता, रचना चतुरी और उनका विचित्र

प्रकृति पर्यवेक्षण उन्हें असाधारण स्थान प्रदान करता है कविवर बाणभट्ट ने कालिदास की प्रशस्ति में लिखा है-

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीति मधुर सान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।। (2)

कालिदास संस्कृत साहित्य के ऐसे महान कवि हैं, जिनके काव्य में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि संजीव, संवेदनशील और सहचर सत्ता के रूप में उपस्थित है ।उनके काव्य में पर्वत, नदी मेघ ,वायु ,वन ,ऋतु ,पशु -पक्षी और पुष्प लताएं केवल सौंदर्यात्मक अलंकरण नहीं अपितु मानवीय भावों के सहचर बनकर उभरते हैं। आधुनिक युग में जब पर्यावरण- संकट ,जलवायु परिवर्तन वन-क्षरण, जैव विविधता -ह्रास और प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन की समस्याएं गंभीर रूप ले चुकी हैं ,तब कालिदास काव्य एक एक वैकल्पिक जीवन दृष्टि प्रस्तुत करता है उनके काव्य में प्रकृति के प्रति आदर ,संरक्षण, सह अस्तित्व ,संतुलन और सौंदर्यबोध का जो स्वर है, वही आज की पर्यावरणीय चेतना का आधार है। कालिदास का प्रकृति दर्शन एक वैकल्पिक संतुलित और जीवन उपयोगी दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द
-प्रकृति चित्रण, पर्यावरणीय चेतना पारिस्थितिकी, प्रकृति सौंदर्य, सौंदर्य बोध।

प्रस्तुत शोध पत्र में कालिदास के प्रमुख ग्रंथों- ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुंतलम्, कुमारसंभवम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् के आधार पर उनके प्रकृति- चित्रण का विश्लेषण किया गया है निष्कर्ष रूप में कालिदास की प्रकृति दृष्टि केवल काव्य चमत्कार नहीं, अपितु गहरी पर्यावरण संवेदना है जो मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं, उसके अंग के रूप में देखने की प्रेरणा देती है ।

भूमिका

कालिदास भारतीय काव्य परंपरा के सर्वाधिक चर्चित और सम्मानित कवि माने जाते हैं ।उन्हें न केवल "कविकुलगुरु" कहा गया , बल्कि उनके काव्य में ऐसी सौंदर्य- चेतना, भाषा- संयम, भाव, रस- निष्पत्ति और प्रकृति संवेदना मिलती है जो उन्हें कालजयी बनाती है।कालिदास प्रकृति को केवल देखने वाले कवि नहीं अपितु प्रकृति के साथ जीने वाले कवि हैं। उनके लिए पर्वत, नदी, मेघ ,वृक्ष लताएं ,पशु- पक्षी और ऋतुएं केवल बाह्य दृश्य नहीं ,बल्कि संवेदना के सहभागी हैं।

आज" पर्यावरणीय चेतना" एक आधुनिक और आवश्यक अवधारणा बन चुकी है ।इसका आशय है - मनुष्य का प्रकृति के साथ संतुलित, जिम्मेदार और नैतिक संबंध ।पर्यावरणीय चेतना केवल वृक्ष लगाने या प्रदूषण रोकने तक सीमित नहीं ,बल्कि वह जीवन दृष्टि है जिसमें प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, साझी जीवन- व्यवस्था माना जाता है। कालिदास के काव्य में यही दृष्टि अनेक रूपों में प्रकट होती है। वे प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन अवश्य करते हैं, पर उसका शोषण नहीं करते वे मनुष्य को प्रकृति से अलग नहीं, प्रकृति के भीतर स्थित मानते हैं। यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

कालिदास के प्रकृति चित्रण में भावनात्मकता , कलात्मकता और दर्शनिकता -तीनों का सम्मिलन है। वे प्रकृति को मानवीय भावों से जोड़ते हैं और मनुष्य के भीतर भी प्राकृतिक लय स्थापित करते हैं उनके काव्य में वर्षा विरह को गहरा करती है, वसंत प्रेम को प्रखर बनाता है, शरद स्वच्छता का बोध कराती है ,हेमंत और शिशिर जीवन- संघर्ष के संकेत देते हैं, और ग्रीष्म तप, श्रम और असंतोष की अनुभूति जगाता है इस प्रकार प्रकृति केवल दृश्य नहीं, जीवन का नैतिक और संवेदनात्मक आधार बन जाती है।

पर्यावरणीय चेतना का अर्थ है प्रकृति के प्रति जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी दृष्टिकोण। इसमें मनुष्य यह स्वीकार करता है कि पृथ्वी जल,वायु वनस्पति जीव- जंतु और जलवायु सब परस्पर जुड़े हुए हैं। यदि इन घटकों में असंतुलन होगा, तो मानव जीवन भी संकटग्रस्त होगा। आधुनिक पर्यावरण अध्ययन में यह बात बार–बार कही जाती है की विकास तभी टिकाऊ है जब वह प्रकृति सम्मत हो।

कालिदास के युग में आधुनिक अर्थों में "पर्यावरण विज्ञान" तो नहीं था किंतु प्रकृति के साथ जीवन जीने की चेतना अवश्य थी ।वैदिक और भारतीय परंपरा में पृथ्वी ,जल, वायु ,अग्नि आकाश को पवित्र माना गया । वृक्षों,नदियों पर्वतों और पशु- पक्षियों में जीवन के दिव्यता देखी गई ।कालिदास इसी सांस्कृतिक परंपरा के महाकवि हैं ।उनके काव्य में यह दृष्टि कलात्मक रूप से विकसित हुई है। वे प्रकृति को देवत्व और जीवन दोनों के रूप में चित्रित करते हैं ।

पर्यावरणीय चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष है "सहअस्तित्व" कालिदास के यहां मनुष्य प्रकृति का विरोधी नहीं, उसका सहभागी है। राजाओं का वनवास, ऋषियों का आश्रम- जीवन, स्त्रियों का पुष्प- संचयन, पशुओं का वन्य जीवन, मेघों का संदेशवाहक बनना ये सभी संबंध प्रकृति और मानव के सहजीवी रूप को दर्शाते हैं इस दृष्टि से कालिदास केवल सौंदर्यवादी कवि नहीं, बल्कि प्रकृति समन्वय के कवि हैं।

कालिदास के प्रकृति -चित्रण में पर्यावरणीय चेतना

कालिदास काव्य में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति जीवंत ,संवेदनशील और मानवीय गुणों से युक्त है। मेघ संदेश लेकर जाते हैं ,लताएं प्रेमिका जैसी प्रतीत होती हैं, पर्वत राजाओं की तरह गरिमामय लगते हैं, नदियां स्त्रियों की तरह प्रवाहमान और सजीव हैं। प्रकृति भावों को तीव्र करती है- वर्षा विरह में व्याकुल करती है, वसंत प्रेम में आकर्षित करती है। प्रकृति के माध्यम से नैतिक गुणों

को अपनाने का संदेश है- वृक्ष छाया देते हैं , नदियां जीवन देती हैं, वन आश्रय देते हैं ,पर्वत स्थिरता सीखते हैं।

ऋतुसंहाराम में प्रकृति- चित्रण पर्यावरणीय चेतना

ऋतुसंहाराम् कालिदास का प्रकृति केंद्रित काव्य है। इसमें षड्ऋतुओं का अत्यंत संजीव सूक्ष्म और मनोहारी वर्णन किया गया है। इसमें केवल ऋतु वर्णन नहीं, अपितु प्रकृति के चक्र और मानव जीवन के संबंधों का काव्यात्मक वर्णन हैकालिदास प्रत्येक ऋतु के साथ प्रकृति के विविध रूपों को जोड़ते हैं ।ग्रीष्म, वर्षा, शरद् ,हेमंत, शिशिर और वसंत ये सभी ऋतुएं पृथ्वी की लय का प्रतीक है ।आज जब जलवायु परिवर्तन में ऋतु चक्र को असंतुलित कर दिया है तब रितु सहर हमें याद दिलाता है कि प्रकृति का अपना नियमित क्रम है जिसे बिगड़ना विनाशकारी हो सकता है।

ग्रीष्म ऋतु के वर्णन में कालिदास सूर्य की तीव्रता धरती की तपन जलाशयों की कमी और प्राणियों की व्याकुलता दिखाते हैं यह केवल कष्ट का चित्रण नहीं बल्कि संसाधनों के महत्व का संकेत भी है जल का अभाव जीने के लिए संकट है आधुनिक पर्यावरणीय दृष्टि से यह जल संरक्षण का संदेश देता है

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीय चन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः।
दिनानतरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये।। (3)

वर्षा ऋतु में धरती की तृप्ति, धान्य की वृद्धि, नदियों की प्रचुरता, मेघों की गरज और प्राणियों की उल्लासपूर्ण गति दिखाई देती है ।कालिदास वर्षा को केवल रोमांटिक अनुभव नहीं,अपितु पृथ्वी के पुनर्जीवन के रूप में देखते हैं। यही पर्यावरणीय बोध है

शरद ऋतु में आकाश की निर्मलता, कमलों की शोभा ,जल की स्वच्छता और वातावरण कीशांत चमक मिलती है। वसंत ऋतु में पुष्पित वृक्ष , कोकिल स्वर और प्रेमोन्माद का वातावरण है। ये ऋतुएं बताती हैं कि प्रकृति अपने सौंदर्य के साथ जीवन को आनंद देती है उसे बचाना हमारा कर्तव्य है। मोर , कोकिल ,चातक, हंस, भ्रमर आदि के माध्यम से प्रकृति का जीवित संसार उभरता है। कालिदास काव्य इस जैव- विविधता के प्रति संवेदनशील है।

रघुवंशम् में प्रकृति- चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

रघुवंशम में इक्ष्वाकु वंश के राजाओं का वर्णन है । यद्यपि इसका विषय राजवंशीय इतिहास है, फिर भी इसमें प्रकृति का चित्रण अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली है। इसमें वर्णित आश्रम संस्कृति प्रकृति संरक्षण की संस्कृति है ।वन केवल कष्ट या निर्जनता का स्थान नहीं, बल्कि तप, साधना, शांति और ज्ञान का केंद्र है। वन केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन प्रणाली के संतुलन के लिए अनिवार्य हैं

रघुवंशम् में राजा दिलीप का नंदिनी गाय की सेवा का प्रसंग प्रकृति और जीव जगत के प्रति सम्मान की भावना को व्यक्त करता है। यह केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि जीवों के प्रति संवेदना और संरक्षण की भावना का प्रतीक है। रघुवंशम् में हिमालय, नदियां ,उद्यान, नगर, प्रकृति और ऋतु परिवर्तन का सुंदर चित्रण मिलता है ।पर्वत स्थिरता और महानता का प्रतीक है, नदियां प्रभाव और जीवन का भूमि उर्वरता और धैर्य का। कालिदास की यह त्रयी आधुनिक पारिस्थितिकी की मूल इकाइयों- स्थल, जल और जैव -जीवन की काव्यात्मक प्रतीकात्मकता भी बन जाती है।

मनोभिरामाः श्रण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
षड्जसंवादिनीः केका द्विधा भिन्नाः शिखण्डिभिः। (4)

मेघदूतम् में प्रकृति -चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

मेघदूतम् में यक्ष का मेघ के माध्यम से अपनी प्रेयसी को संदेश भेजना काव्य का केंद्र है। लेकिन मेघदूत केवल विरह काव्य नहीं, बल्कि प्रकृति के विविध रूपों का अद्भुत चित्रण भी है। यहां पर्वत, नदी, नगर ,वन ,पुष्प, पक्षी, बादल सभी जीवंत हैं ।यहां मेघ केवल जल- वहन करने वाला बादल "धूमज्योतिस्सलिलमरुतां सन्निपातः" नहीं अपितु जीवनदायी शक्ति है।

जाता वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां।
जानामि त्वां प्रकृति पुरुषं कामरुपं मघोनः।। (5)

मेघदूतम् में पर्वतों का वर्णन अत्यंत सुंदर है। मेघ को मार्ग में जिन पर्वतों, नदियों और वन प्रदेशों से होकर जाना है वे केवल भौगोलिक स्थल नहीं बल्कि प्राकृतिक जीवन के केंद्र हैं। हिमालय की भव्यता शिखरों की शांति हिम की शीतलता और वनस्पतियों की घनता - all these evoke ecological harmony. नदियों का वर्णन जीवन के प्रवाह का प्रतीक है ।नदियां केवल भूगोल नहीं, संस्कृति और सभ्यता की धमनियां हैं।

वेणीभूत प्रतनुसलिला सावतीतस्य सिंधुः।
पाण्डुच्छाया तटरूहतरूभ्रंशिभिजीर्णपर्णैः।। (6)

कुमारसंभवम् में प्रकृति -चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

कुमारसंभव में प्रकृति का एक भव्य और आध्यात्मिक रूप मिलता है। हिमालय यहां केवल पर्वत नहीं देवत्व का आधार है ।पार्वती की तपस्या ,शिव का योग ,हिमालय का वैभव- इन सब के केंद्र में प्रकृति है। हिमालय भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु, नदियों ,पर्वत- श्रृंखलाओं और जैव विविधता का आधार है। कालिदास ने हिमालय को ' नगाधिराज ' के रूप में प्रतिष्ठित किया है

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधि वगाह्य स्थितः पृथ्वी इव मानदण्डः।।(7)

आज हिमालय पर जो पर्यावरणीय संकट हैं- बर्फ का पिघलना, भूस्खलन, अनियंत्रित निर्माण -वे हमें कालिदासीय दृष्टि की याद दिलाते हैं।

धातुताम्राधरः प्रांशुर्देवदारूबृहद्भुजः।
प्रकृत्यैव शिलोरस्कः हिमवानिति।।(8)

पार्वती की तपस्या वन, पर्वत ,लता ,पर्ण, फल और ,जल के बीच होती है। इस तपः स्थली में प्रकृति सहयोगी है वह तपस्या की विरोधी नहीं, सहचरी है ।भारतीय परंपरा में आध्यात्मिक साधना प्रकृति के विरोध में नहीं, उसके आलोक में होती थी। आधुनिक जीवन शैली ने मनुष्य को प्रकृति से दूर किया है; कालिदास उसे पुनः प्रकृति की गोद में लौटने की प्रेरणा देते हैं।

मालविकाग्निमित्रम् में प्रकृति- चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

मालविकाग्निमित्रम् में उद्यान, पुष्प, लताएं और ऋतु -सौंदर्य का सुंदर वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति में उद्यान केवल मनोरंजन का स्थान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक जीवन का अंग रहा है ।उद्यान का संरक्षण, वृक्षारोपण ,पुष्प- विविधता और स्वच्छ वातावरण आधुनिक हरित जीवन के आवश्यक आयाम है। प्रमदवन वर्णन, अशोक दोहद द्वारा कालिदास के यहां उद्यान प्रकृति के सौंदर्य का मानवीय संस्कार है।

आदाय कर्ण किसलयमस्मादियमत्र चरणमर्पयति।
उभयोः सदृश विनिमयादात्मानं वंचितं मन्ये ।।(9)

विक्रमोर्वशीयम् में प्रकृति- चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

विक्रमोर्वशीयम् में पुरूरवा उर्वशी के प्रेम, विरह और पुनर्मिलन की कथा के साथ–साथ प्रकृति का अत्यंत मनोहारी चित्रण प्राप्त होता है। गंधमादन पर्वत प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र है। यहां झरने ,वृक्ष पुष्प पक्षियों का समन्वित चित्र दिखाई देता है पुष्पों और लताओं का वर्णन है जिनमें कमल, अशोक, कर्णिकार चंपक मल्लिका आदि हैं। उर्वशी का लता में रूपांतरण प्रकृति और मानव के अभिन्न संबंध का प्रतीक है।

अभिज्ञानशाकुंतलम् में प्रकृति -चित्रण और पर्यावरणीय चेतना

महाकवि कालिदास के नाटकों में अभिज्ञान शकुंतलम् विशेष रूप से प्रकृति प्रधान है। दुष्यंत और शकुंतला का मिलन और विरह दोनों ही प्रकृति के मध्य घटित होते हैं। शकुंतला का आश्रम जीवन ,वनस्पति ,मृग ,पक्षी लताएं ,जल और ऋतुएं नाटक को एक गहन प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते हैं।

कण्व आश्रम प्रकृति सहजीवन का आदर्श रूप है। वहां सभी जीवो के प्रति करुणा है ।मृग आश्रम में निर्भय हैं, पक्षी स्वच्छंद है, वृक्ष फल -फूल से लदे हैं ।यह आदर्श पारिस्थितिक व्यवस्था आधुनिक शहरी जीवन के विपरीत एक संतुलित, शांत और समृद्ध जीवन रूप प्रस्तुत करती है। यथा-

कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूला, भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोद्गमेन।
एते चार्वागुपवनभुवि च्छिन्नदर्भाङ्कुरायां, नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति॥(10)

शकुंतला प्रकृति की पुत्री जैसी है ।वह पुष्पों को सींचती है, वृक्षों से संवाद करती है, मृगों पर स्नेह करती है ।इससे स्त्री और प्रकृति का एक गहरा संबंध प्रकट होता है। यह संबंध शोषण का नहीं संरक्षण का है

यस्य त्वया व्रणविरोहणमिङ्गदीनां, तैलं न्यषिच्यत मुखेकुशसूचिविद्धे।श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥(11)

शकुंतला की विदाई के अवसर पर न केवल सखियां ही व्याकुल हैं अपितु चेतन अचेतन सभी पदार्थ अपनी व्याकुलता को प्रकट करते हैं यथा-

उद्गलित दर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।(12)

शकुंतला वृत्तांत में प्रकृति से अलगाव की पीड़ा भी है। जब स्मृति-विच्छेद होता है तब मनुष्य का अपने मूल परिवेश से संबंध टूटता है ।आधुनिक पर्यावरणीय संकट भी इसी प्रकार का विच्छेद है- मनुष्य प्रकृति को भूलकर तकनीक और उपभोग में उलझ गया है। शकुंतला का दुख इस आधुनिक विछोह का प्रतीकात्मक पाठ है

आधुनिक पर्यावरणीय संकट और कालिदास की प्रासंगिकता

आज विश्व जिन पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है वे कालिदासीय दृष्टि की आवश्यकता को और अधिक गहरा करते हैं ।वनों की कटाई, भूमि क्षरण ,नदी- प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन जैव-विविधता का नाश,अनियंत्रित शहरी करण -ये सब मनुष्य और प्रकृति के टूटते संबंधों के परिणाम हैं ।

कालिदास काव्य हमें याद दिलाता है कि मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति पर आधारित है यदि ऋतुएं बिगड़ेंगी जल स्रोत सूखेंगे, पर्वत कमजोर होंगे, वन नष्ट होंगे और जीव जगत संकट में पड़ेगा तो मानव सभ्यता भी सुरक्षित नहीं रह सकती। उनके काव्य में प्रकृति का जो आधार है वही आज पर्यावरण नीति और व्यवहार का आधार हो सकता है।

उनके काव्य में नदियों मेघों और सरोवरों का वर्णन जल की महत्ता को रेखांकित करता है ।आज जल संकट के समय कालिदास हमें जल की पवित्रता और उपयोगिता दोनों याद दिलाते हैं। वन केवल लकड़ी का स्रोत नहीं जीवन के आधार हैं कालिदास के वन -चित्रण से स्पष्ट है कि वन - जीव -जगत, जलवायु और मानव कल्याण से गहराई से जुड़े हैं। कालिदास के काव्य में पशु- पक्षी, कीट,पुष्प लताएं सभी का स्थान है। यह जैव विविधता के महत्व को दर्शाता है आधुनिक पर्यावरणीय संकट में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण चेतावनी है।कालिदास काव्य मनुष्य के अहंकार को कम करता है। वह मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं उसका एक अंग बनाता है ।यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है

भारतीय परंपरा में प्रकृति के प्रति श्रद्धा प्राचीन है ।पृथ्वी को माता कहा गया , जल को जीवन कहा गया वृक्षों को देव तुल्य माना गया। कालिदास इसी परंपरा के महान काव्य -पुरुष हैं उनके काव्य में यह दृष्टि सौंदर्य और संवेदना के रूप में अभिव्यक्त हुई है भारतीय जीवन दृष्टि में मनुष्य अकेला नहीं, समस्त सृष्टि के साथ सह अस्तित्व में है। वृक्ष, जल ,पशु, पक्षी ,पर्वत, आकाश -सबका अपना महत्व है कालिदास इस जीवन दृष्टि को काव्यात्मक ऊंचाई देते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी केवल साहित्य नहीं जीवन शिक्षा भी है। कालिदास काव्य हमें एक संतुलित जीवन- दर्शन देता है उनके काव्य से निम्नलिखित समकालीन मूल्य उभरते हैं जैसे- प्रकृति के साथ सम्मान पूर्ण संबंध

वन नदी पर्वत और जल स्रोतों का संरक्षण
जीव- जगत के प्रति करुणा
ऋतु चक्र और जैव विविधता का महत्व
सौंदर्य और नैतिकता का एकीकरण
सहअस्तित्व और संतुलित विकास की दृष्टि
इस प्रकार कालिदास काव्य हमें विकास और प्रकृति के बीच संतुलन की शिक्षा देता है

कालिदास का प्रकृति चित्रण आज के शिक्षण ,शोध और पर्यावरण जागरण में विशेष उपयोगी है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उनके काव्य के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा दी जा सकती है ।सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी ऋतु- चेतना और प्रकृति- भावना प्रस्तुत की जा सकती है ।आधुनिक लेखक और कवि प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील दृष्टि विकसित कर सकते हैं। नीति निर्माण में भी यह भावना सहायक हो सकती है कि विकास प्रकृति विरोधी न हो।

निष्कर्ष

कालिदास का प्रकृति चित्रण भारतीय काव्य परंपरा का सर्वोच्च वैभव है। उनके काव्य में प्रकृति केवल अलंकरण नहीं जीवन दर्शन है ।यद्यपि कालिदास की रचनाएं मूलतः काव्य- रचनाएं हैं, वैज्ञानिक पर्यावरण ग्रंथ नहीं, फिर भी उनमें निहित प्रकृति चेतना अत्यंत गहरी है। यह कहना उचित होगा कि कालिदास ने आधुनिक अर्थों में पर्यावरणवाद नहीं लिखा, किंतु उनके काव्य में पर्यावरणीय संवेदना अवश्य विद्यमान है रघुवंशम् में वन और आश्रम, कुमारसंभवम् में हिमालय और सृजन, मेघदूतम् में मेघ और विरह, ऋतु संहारम् में ऋतु -चक्र और जैविक लय, अभिज्ञान शाकुंतलम् में आश्रम पर्यावरण और

जीवन की सह -अस्तित्वशीलता ये सभी मिलकर एक ऐसी पारिस्थितिक चेतना निर्मित करते हैं जो आज के संकटग्रस्त पर्यावरणीय युग में मार्गदर्शक हो सकती है।

आज जब मानवता पर्यावरणीय संकटों से जूझ रही है तब कालिदास का काव्य हमें एक स्वस्थ संतुलित और संवेदनशील जीवन दृष्टि प्रदान करता है। वह हमें सिखाता है की प्रकृति का दोहन नहीं उसका संरक्षण आवश्यक है ; प्रकृति से संघर्ष नहीं, सहजीवन आवश्यक है ; प्रकृति का उपभोग नहीं उसका सम्मान आवश्यक है ।इस प्रकार कालिदास का प्रकृति चित्रण आधुनिक पर्यावरणीय चेतना के लिए अत्यंत प्रासंगिक प्रेरक और मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

संदर्भ -ग्रंथ सूची

1. रघुवंशम् में वस्तु ध्वनि, अध्याय-3 पृष्ठ संख्या-37
2. कालिदास की कला और संस्कृति(2)
3. पृष्ठ संख्या-11
4. ऋतुसंहारम् 1.1
5. रघुवंशम् -1.39
6. मेघदूतम-1.6
7. मेघदूतम-1.29
8. कुमारसंभवम् 1.1
9. कुमारसंभवम् 6.51
10. मालविकाग्निमित्रम् 3.16
11. अभिज्ञानशाकुंतलम्1.13
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4.14
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम्4.12